Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :10.16(2026); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer-Peer Reviewed, Refereed & Open Access International Journal - As per UGC Norms
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:15, Issue:5(3), May 2026
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed: Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in

हिंदी-तेलुगु उपन्यासों में नारी संवेदना

डॉ. नारायणा

संक्षेप

यह आलेख हिंदी और तेलुगु उपन्यासों में चित्रित नारी संवेदना तथा दांपत्य जीवन के विविध आयामों का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है। इसमें यह स्पष्ट किया गया है कि दोनों भाषाओं की उपन्यास-लेखिकाओं ने पारिवारिक जीवन को केंद्र में रखते हुए दांपत्य संबंधों की जटिलताओं, संघर्षों और परिवर्तनशीलता को गहराई से चित्रित किया है। आधुनिक परिवेश में बदलती पारिवारिक संरचना—विशेषकर संयुक्त परिवार से एकल परिवार की ओर संक्रमण—ने पति-पत्नी संबंधों में तनाव, वैचारिक भिन्नता, अहं, शंका, आर्थिक असमानता और लैंगिक शोषण जैसी समस्याओं को जन्म दिया है। लेखिकाओं ने इन समस्याओं के माध्यम से नारी की पीड़ा, संघर्ष, सहनशीलता और प्रतिरोध को उजागर किया है। इस प्रकार यह अध्ययन नारी संवेदना के विविध रूपों को दांपत्य जीवन के संदर्भ में रेखांकित करता है।

उद्देश्य

1. हिंदी और तेलुगु उपन्यासों में दांपत्य जीवन के स्वरूप का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. नारी संवेदना और उसकी अभिव्यक्ति के विभिन्न रूपों को समझना।
3. आधुनिक पारिवारिक संरचना में आए परिवर्तनों का दांपत्य संबंधों पर प्रभाव स्पष्ट करना।
4. उपन्यासों में चित्रित नारी की सामाजिक, मानसिक और भावनात्मक स्थिति का विश्लेषण करना।
5. दांपत्य जीवन में उत्पन्न समस्याओं के कारणों एवं उनके परिणामों का अध्ययन करना।

हिंदी और तेलुगु की उपन्यास-लेखिकाओं के सारे उपन्यासों में दांपत्य जीवन की चर्चा अनिवार्य रूप से देखी जाती है। दांपत्य जीवन की समस्याओं एवं संकटों को दृष्टि में रखकर उन्हीं को केंद्र बनाकर लिखे गए उपन्यास और उन उपन्यासों को लिखनेवाली लेखिकाओं की अलग पहचान की जा सकती है।

पारिवारिक और सामाजिक जीवन में दांपत्य संबंधों का और दांपत्य जीवन का अधिक महत्व है। क्यों कि परिवार का मूलाधार दंपति ही है। उन के संतुलित और सुखी जीवन ही पारिवारिक जीवन का मूल आधार माना जाता है। उसी रूप में परिवार के दांपत्य जीवन का प्रभाव सिर्फ परिवार पर ही नहीं बल्कि पूरे समाज पर पडता है। इस रूप में पारिवारिक दांपत्य जीवन परिवार के स्तर पर और समाज के स्तर पर अधिक महत्व रखता है।

हिंदी और तेलुगु उपन्यास लेखिकाओं ने बडी मात्रा में उपन्यास लिखे हैं। उन उपन्यासों के कथ्यगत विश्लेषण से एक बात की पुष्टि होती है कि लगभग सारे उपन्यासों में परिवार और उससे जुडे आयाम ही व्यक्त हुए हैं। फिर परिवार का केंद्र दांपत्य जीवन ही है। दांपत्य जीवन के आयाम को स्पर्श किए बिना परिवार में होनेवाले बदलाव और समस्याओं की अभिव्यक्ति आसान नहीं है। इसलिए हिंदी और तेलुगु की उपन्यास लेखिकाओं के उपन्यासों में दांपत्य जीवन ही अधिक गूंजता दिखाई देता है।

भारत अपनी पारिवारिक व्यवस्था के लिए विश्व प्रसिद्ध है। कई पीढियों के परिवार के साथ संयुक्त परिवार में जीना भारत की सबसे बडी विशेषता है। समय के साथ थोडा बहुत बदलाव होने पर भी आज कई संयुक्त परिवार में देखे जाते हैं। उन परिवारों में जीनेवाले दंपति अत्यंत सुखी एवं समृद्ध जीवन जी रहे हैं।आज का यथार्थ यही है कि व्यक्ति केंद्रित स्वार्थों के कारण पारिवारिक जीवन काफी सीमा तक बदल गया है। बेटे बहु, भाई-भाई, भाभी-ननद आदि संबंधों के बुनियादी परिवर्तन के कारण भारत की पारिवारिक व्यवस्था आज काफी सीमा तक बदल गयी है। निम्न वर्ग, मध्य वर्ग के औसत माता पिता विवाह के बाद अपनी संतान को अपने साथ रखने की जगह अलग स्वतंत्र परिवार में जीने की

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :10.16(2026); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer-Peer Reviewed, Refereed & Open Access International Journal - As per UGC Norms
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:15, Issue:5(3), May 2026
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed: Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in

इजाजत दे रहे हैं। परिणाम स्वरूप एकल परिवारों की संख्या बढ रही है। एकल परिवार, संयुक्त परिवार और विस्तृत परिवार तीनों प्रकारों की पारिवारिक व्यवस्था में दांपत्य जीवन संबंधी समस्याएँ उत्पन्न हो रही है। इन परिवारों की समस्याएँ भी भिन्न ही होती हैं।

उसी रूप में विस्तृत परिवार और एकल परिवारों में मूल परिवार से दूर रहने के कारण दांपत्य जीवन में उठनेवाली छोटी मोटी समस्याओं का समधान करने के लिए कोई पारिवारिक सदस्य मौजूद नहीं रहता है। इस कारण से छोटी मोटी समस्या ही बडा होकर दांपत्य जीवन को खतरे में डालती है। समकालीन हिंदी और तेलुगु की लेखिकाएँ इन संदर्भों को ही विषय-वस्तु बनाकर उपन्यास रचे हैं। उन उपन्यास-लेखिकाओं में हिंदी की उषा प्रियंवदा, शिवानी, मृदुला गर्ग, कृष्णा सोबती, निरुपमा सोबती, मणिका मोहिनी, सूर्यबाला, नासिरा शर्मा, चित्रामृदगल, मृणाल पांडेय, ममता कालिया, चित्रा मृदगल, रजनी पाणिकर, कंचनलता, शशिप्रभा शास्त्री, कृष्णा अग्निहोत्री, मेहरुन्निसा फरवेज, प्रभा खेतान, मालती जोशी, मंजुल भगत, कुसुम अंसल, ऋता शुक्ल मधु कांकरिया आदि उल्लेखनीय हैं। तेलुगु की उपन्यास लेखिकाओं में मुप्पाला रंगनायकम्मा, वासिरेड्डी सीता देवी, यद्धनपूडी सुलोचचना राणी, मादिरेड्डी सुलोचना, कावलिपाटि विजयलक्ष्मी, कोडूरि कौसल्या देवी, डॉ. सी. आनंदराममम् डी. कामेश्वरी, द्विवेदुल विशालाक्षी, कोलिपाक रमामणि, डॉ. सी. आनंदराममम् डी. कामेश्वरी, द्विवेदुल विशालाक्षी, कोलिपाक रमामणि, नल्लूरि रूक्मिणि, मल्लादि सुब्बम्मा, गोविंदराजु सीता देवी, विजय लक्ष्मी, कुप्पिलि पद्मा, ओल्गा आदि विशेष उल्लेखनीय हैं।

वर्तमान पारिवारिक जीवन की एक मजबूरी है। रोजगार के कारण ही मुख्य रूप से नये दंपति नयी जगहों पर अपने परिवार से दूर परिवार बसाने के लिए विवश होते हैं। परिवार के साथ रहने की इच्छा होने के बावजूद रोजगार की तलाश के कारण पति-पत्नी और अन्य पारिवारिक सदस्य अन्य जगहों पर रहने के लिए मजबूर होते हैं।

पति-पत्नी की वैयक्तिक दुर्बलताएँ :-

दांपत्य जीवन वह गाडी जिस के पति और पत्नी दो महत्वपूर्ण पहिएँ हैं। दोनों के सहयोग से और सही चलन से गाडी ठीक चलती है। दोनों में तालमेल नहीं है दोनों अलग दिशाओं में यात्रा करते हैं, तो गाडी आगे नहीं बढ़ सकती है। पति-पत्नी दोनों सभी स्तरों पर समान होने से ही दोनों के बीच में सहज समझौता संभव हो सकता है। अगर ऐसा नहीं होता है तो दोनों के बीच में खाई बढती है।

समझौताहीनता दांपत्य जीवन को अत्यधिक प्रभावित करती हैं। अहं ही वैयक्तिक दुर्बलताओं के लिए आधार बनता है। वैयक्तिक दुर्बलताओं के लिए अहं और वैचारिक भिन्नता भी कारण बन सकती है। आज के शिक्षित व अशिक्षित दंपतियों में विशेषकर वैचारिक भिन्नता देखी जाती है। अनमेल विवाह जैसे तत्व भी वैचारिक भिन्नता के लिए कारण बन सकते हैं। वैचारिक भिन्नता के लिए आर्थिक कारण भी आधार बन सकते हैं। किंतु एक बार दंपतियों में वैचारिक भिन्नता शुरु होती है उस के लिए कोई अंत नहीं होता है। उस में अहं शामिल होकर एक दूसरे के विचारों को सम्मान देना बंद हो जाता है। उस के साथ साथ दोनों में स्वाभिमान भी जागता है। ये सारे संदर्भ उन की वैचारिक भिन्नता के लिए कारण बनते हैं। हिंदी और तेलुगु की उपन्यास लेखिकाओं ने अपने उपन्यासों में वैचारिक भिन्नता के कारण तनाव ग्रस्त हुए दांपत्य जीवन पर प्रकाश डाला है। ऐसे दंपतियों कोसाक्षात किस क्रि वैचारिक शिवता के परिणाम बहुत बुरे होते हैं।

अनमेल विवाह से उत्पन्न वैचारिक भिन्नता ममता कालिया के 'बेघर' उपन्यास में देख सकते हैं। इस में परमजीत और रमा दंपति है। परमजीत का विवाह रमा से उस की इच्छा के विपरीत होता है। रमा अहंजन्य, परंपरावादी अनपढ लडकी है। परमजीत के विचारों से उस का मेल नहीं खाता है। परमजीत पत्नी से प्रेम व्यवहार चाहता है। यह नहीं दे पाती है। फिर भी परमजीत को जीवन भर संवेदनाशून्य, कंजूस, जिद्धी पत्नी के साथ ही गुजारना पडता है। लेखिका ने लिखा है- "रमा को इस की जरा भी फिक्र या चेतना नहीं थी कि उस का पति उससे संतुष्ट है या नहीं। घर के लोग खुश हैं या दुखी वह परमजीत के साथ की अपेक्षा ज्यादा समय पडोस में बिताती।"' स्पष्ट है कि लेखिका ने रमा की दुर्बलता के कारण रमा और परमजीत के दांपत्य जीवन तनावग्रस्त होते दिखाया है। परमजीत पत्नी के साथ रहते हुए भी बेघर हो गया है।

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :10.16(2026); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer-Peer Reviewed, Refereed & Open Access International Journal - As per UGC Norms
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:15, Issue:5(3), May 2026
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed: Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in

उपन्यास लेखिका लता के' मिस मोहिनी' उपन्यास में मोहिनी और रमेश दोनों दंपति है। दोनों का प्रेम विवाह है। फिर भी विवाह के कुछ दिन बाद ही दोनों के विचारों में अंतर पाया जाता है। मोहिन चाहती है कि रमेश ही उस के पास ही आकर रहे। उसका विचार है कि रमेश घरजमाई बने। उसी के पास ही रहे। किंतु रमेश का अहं इस के लिए राजी नहीं होता है। वह मोहिनी को ही अपने यहाँ आकर रहने के लिए कहता है। "तुम मेरी पत्नी हो। मेरी इच्छा के अनुसार तुम को चलना होगा। तुम्हारे घर में जमाई के रूप में मैं नहीं रह सकता। तुम्हारे पेसे मैं अपना पेट भर नहीं सकता" जब कि मोहिनी उससे कहती है कि यह पैसा मेरा ही नहीं है। हम दोनों ने प्रेम करके ही विवाह कर लिया है। ऐसे में इस रूप में सोचना उचित नहीं है। स्पष्ट है कि यहाँ रमेश का अहं काम कर रहा है। वह ससुराल के पैसे को लेना पसंद नहीं करता है।

जोन्नलगड्डा ललिता देवी के 'राग तरंगालु' उपन्यास में पति पत्नी के आर्थिक स्तर भिन्न होने से उन में वैचारिक भिन्नता शुरु होती है। परिमला एक छोटे घर से आयी है। जब कि उस के पति किरण का घर बडा है। पैसे वाले हैं। वह इसलिए एडजस्ट नहीं हो पाती है। वह पति के खुल कर व्यवहार भी नहीं करती है। उसकी आदतें व्यवहार आदि भिन्न होते हैं। वह पति के साथ स्वेच्छा से भी घूम नहीं पाती है। धीरे धीरे वह कुंठित हो जाती है। कुंठित होने के बाद परिमला अपने पडोस के सूर्यम की ओर झुकती है। उस के साथ अवैध संबंध रखती है। इस रूप में परिमला और किरण का दांपत्य जीवन तनावग्रस्त होता है।

मुप्पाल्ल रंगनायकम्मा के 'बलिपीठम' उपन्यास की नायिका अरुणा हरिजन भास्कर से विवाह करती है। आरंभ में वह बहुत आदर्शवादी लगती है। लेकिन शीघ्र ही वह पश्चाताप करती है कि क्यों उसने हरिजन से विवाह किया है। क्यों कि दोनों के विचारों में तथा आदतों में काफी अंतर है। वर्ग वैषम्य के साथ साथ यहाँ पर वैचारिक भिन्नता भी काम करती है। अरुणा की उच्चवर्गीय सभ्यता है तो भास्कर की निम्नवर्गीय सभ्यता है। पहनावे-ओढावे में तथा खान पान में भी अंतर है। भास्कर के रिश्तेदारों के साथ अरुणा का नहीं पटता है। भास्कर के रिश्तेदार उसे अजीब ढंग से देखते हैं। वह भास्कर के साथ किसी भी रूप में एडजस्ट नहीं हो पाती है। यहाँ भास्कर बली का बकरा (बलिपीठम)बनता है। लेखिका ने भास्कर के साथ संवेदना जतायी है। अरुणा के आवेशपूर्ण एवं आदर्श व्यवहार के कारण दोनों का दांपत्य जीवन तनावग्रस्त हो जाता है।

मृदुला गर्ग ने अपने 'कठ गुलाब' उपन्यास में पति की कामुकता के कारण दांपत्य जीवन को तनावग्रस्त होते दिखाया है। कामुक पति अपनी पत्नी की छोटी बहन का बलत्कार करता है। परिवारवाले ही इस का प्रोत्साहन करते हैं। नारी की अनुमति के बिना, उस के साथ सेक्स संबंध रखने की अनुमति के बिना बल पूर्वक उस के साथ सेक्स करना बलत्कार माना जाता है। 'कठगुलाब' उपन्यास की स्मिता बलत्कार का शिकार होती है। बलत्कारी और कोई दूसरा नहीं है। बल्कि उस का जीजा है यानी बहिन का पति है। जिस के घर में स्मिता आश्रय के लिए आयी है। उस मान-प्राण का संरक्षक बनने की जगह उसका जीजा उस की इज्जत को ही लूट लेते हैं। दिन दहाडे परिवार में रहते समय परिवार के अंदर ही लूटता है। यह नारी के लिए बहुत बडी चुनौती है। इस का संदेह स्मिता की बहन नमिता को पहले से था। लेकिन वह डरपोक है। कुछ भी नहीं कर पाती है। बलत्कार होने के बाद भी वह कुछ भी नहीं कर पाती है। बल्कि स्मिता इस उपन्यास में इस जघन्य अपराध के होने के बाद स्वयं अपराध बोध के अंदर दबने की जगह धैर्य के साथ अपनी पढाई को आगे बढाती है। बल्कि अपने जीजा से बदला लेने की ताकत को बढाने की कोशिश करती है। लेखिका ने इस प्रकार परिवार के अंदर ही होनेवाले लैंगिक शोषण का कडा विरोध किया है। स्मिता को उस समय बहुत राहत मिलती है कि जब उसके जीजा की मृत्यु हो जाती है। वह इस को श्रय भगवान को ही देती है। इस रूप में लेखिका ने नमिता के पति को दंड देकर इस की ओर संकेत किया कि ऐसे जघन्य अत्याचार करनेवालों का अंत ऐसा ही होता है। स्मिता अपने जीजा के प्रति प्रतिशोध की भावना पालती है। जब उसे उस की मृत्यु का समाचार मिलता है तो लेखिका ने उस के मुँह से कहलवाया है- "वह मर गया इससे मेरा प्रतिशोध कहाँ पूरा हुआ? बल्कि भयानक छल हुआ मेरे साथ ? मैं ताकत बटोरती रह गयी और किसी ने उस का काम तमाम कर दिया। किसी और ने क्या ? खुद भगवान ने पर जो भगवान मेरी

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :10.16(2026); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer-Peer Reviewed, Refereed & Open Access International Journal - As per UGC Norms
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:15, Issue:5(3), May 2026
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed: Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in

अस्मिता नहीं बचा नहीं पाया वह मेरा बदला क्यों ले ? भगवान का भी इस में क्या दोष ? कमजोर तो मैं थी जो हवाई किलों पर हमले करके संतुष्ट होती रही करने के नाम पर सिफर। "2 स्मिता की यह प्रतिशोध-भावना जायज है। फिर भी उस के कुछ करने के पहले उस के जीजा के साथ सब कुछ हो जाता है। जीजा की कामुकता उस बहन के दांपत्य जीवन को तथा स्मीता के जीवन को जला कर देती है। स्मिता ज्यादा स्मिता की बहन इससे प्रभावित होती है। वह जीवन भर दुख झेलती है।

तेलुगु की उपन्यास लेखिका परिमला सोमेश्वर के 'अंतरंग तरंगालु' उपन्यास में एक महत्वाकांक्षी एवं भोग लिप्सा को महत्व देनेवाली नारी लक्ष्मी के जीवन का चित्रण किया गया है। लक्ष्मी का पति गुरनाधम है। वह उससे संतुष्ट नहीं होती है। वह एक विद्यार्थी गोपालम की ओर आकर्षित होती है। इससे उन के दांपत्य जीवन में तनाव शुरु होता है। लक्ष्मी खुल कर गोपालम के साथ शारीरिक संबंध जोडती है। इससे गुरनाधम विरक्त हो जाती है। युवक होते हुए भी असमय आत्म हत्या कर लेता है। लक्ष्मी की भोग लिप्सा का शिकार उस का पति गुरनाधम होता है। वह असमय मर जाता है। लेखिका ने गुरनाधम लक्ष्मी के दांपत्य जीवन के माध्यम से यह संकेत दिया कि पत्नी की भोग लिप्सा व कामुकता दांपत्य जीवन पर भयंकर प्रभाव डालता है।

शंकालु स्वभाव भी वैयक्तिक दुर्बलता माना जाता है। पति-पत्नी के एक दूसरे पर शक करने से उन का दांपत्य जीवन बिगड जाता है। पुरुष सत्ताक समाज में रहने के कारण पति शक का अधिक शिकार होता है। पत्नी किसी पराये पुरुष के साथ घूमती है, बात करती है, काम करती है, उस के साथ क्लब, पार्क आदि जाती है तो पुरुष सहन नहीं कर सकता है। दूसरी ओर पति किसी स्त्री के साथ यह सब करने के बाद भी वह अनुभव करता है कि पत्नी को उस पर कोई शक नहीं होना चाहिए। क्यों कि वह सोचता है कि "काम की वजह से वह दूसरी स्त्री के साथ मिल जुल कर रहने के लिए मजबूर है। वह यह नहीं सोचता है कि पत्नी भी अपने काम के दौरान ही ऐसा करने के लिए मजूबर है। पत्नी भी पति के किसी दूसरी युवती या नारी के साथ संबंध को स्वीकार नहीं करती है। अगर अपना पति किसी युवती के साथ असाधारण व्यवहार करने लगता है तो वह उस की निगरानी रखती है।" इस रूप में पति-पत्नी एक दूसरे पर शक करके अपने दांपत्य जीवन को तनावग्रस्त बना डालते हैं।

तेलुगु उपन्यास लेखिका बीना देवी के 'पुण्यभूमि कल्लु तेरु' (पुण्य भूमि आंखें खोलो) उपन्यास में पति-पत्नी के बीच में शंकालु स्वभाव के पैदा होने के चित्रण किया है। इस उपन्यास में राजम्मा और सिंहाचलम पति पत्नी हैं। इस में पति अकमाऊ है। इसी वजह से उस में हीनता की ग्रंथी पैदा होती है। पति काम करके घर चलाती है। उस की कमाई पर पलते हुए भी पति सिंहाचलम अपनी पत्नी पर शक करने लगता है। इसलिए कि पत्नी घर बाहर काम करती है। कई पुरुषों के साथ उसे निपटना पडता है। खास कर जहाँ काम करती है वहाँ का मालिक रंगराजु है। उस के बार में सिंहाचलम गलत सोचता है। राजम्मा पर शक करने लगता है। वह अपाहिज है इसलिए उस में हीनता की ग्रंथी पैदा होती है। घर में रह कर कई प्रकार की कल्पनाएँ वह करता बैठता है। अपाहिज पति को घर पर छोडकर राजम्मा छोटे मोटे काम करते घर चलाती है। वह प्रिन्सिपार रंगराजु के घर में नौकरानी का काम करती है। तब सिंहाचलम के मन में पत्नी को लेकर शंका पैदा होती है। उसका शक है कि " आज बिस्तर बिछानेवाला रंगराजु कल बिस्तर पर आने के लिए कहेगा।" इसी शक की वजह से उन के दांपत्य जीवन में तनाव शुरु होता है।

दांपत्य जीवन का यह तनाव एक सिंहाचलम को क्रूर बना डालता है। वह अपनी पत्नी को मारना पीटना शुरु करता है। साथ ही व्यसनलोलुप होकर शराब पीना शुरु करता है। इस रूप में वह चारित्रिक रूप से भी गिर जाता है। इस बीच रंगराजु की पत्नी लक्ष्मी की मृत्यु हो जाती है। तब राजम्मा रंगराजु के बच्चों को भी संभालने लगती है। राजम्मा की मेहनत बढती जाती है। दूसरी ओर सिंहाचलम के ताना सुनना और मार पीट सहना अधिक होने लगता है। घर में काम करनेवाली राजम्मा के सामने रंगराजु शारीरिक संबंध का प्रस्ताव रखता है। पहले से तनाव में रहनेवाली राजम्मा उसे न कह सकती है। जिससे दोनों के बीच में शारीरिक संबंध हो जाता है। सिंहाचलम का शक सच हो जाता है। सिंहाचलम के व्यवहार से तंग आकर उस के साथ उस के पवित्र संबंध की सार्थकता पर पुनःसमीक्षा करती है। ऐसे ही क्षणों में वह

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :10.16(2026); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer-Peer Reviewed, Refereed & Open Access International Journal - As per UGC Norms
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:15, Issue:5(3), May 2026
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed: Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in

रंगराजु के साथ संबंध के लिए तैयार हो जाती है। इसी उपन्यास की नरसम्मा का पति भी उस पर शक करने लगता है। पति के शक से मुक्त होने के लिए नरसम्मा घर से भाग जाती है। वह पति को छोड कर कनकय्या के साथ भाग जाती है। नरसम्मा की सोच के बारे में लेखिका ने लिखा है- "सडे गले व्यवहार करनेवाला पति अब ठीक होने का नहीं है। ठीक होगा भी तो कोई फायदा नहीं है। कनकय्या की उम्र पच्चीस साल है। मांस पेशियों सा भरा उस का शरीर उस के लिए चाहिए। सामाजिक मूल्यों का निर्वहण शयन कक्ष में करने की आवश्यकता नहीं है।" पति के शक की वजह से राजम्मा और नरसम्मा के दांपत्य जीवन इस रूप में असफल हो जाता है। नरसम्मा तो अपने पति को छोड कर भाग जाती है। राजम्मा अपने अपाहिज पति के साथ ही जीने के लिए विवश होती है।

जोन्नलगड्डु ललिता देवी के 'बेटर ऑफ' उपन्यास में नारी की अतृप्त लालसा के कारण असफल होनेवाले दांपत्य जीवन का चित्रण किया गया है। विभाकर और कांचना इस उपन्यास के पति-पत्नी है। उन का दांपत्य जीवन आरंभ से सुखी नहीं है। विभाकर असमय मर जाता है। उन का दांपत्य जीवन पूरी तरह टूट जाता है। कांचना पति के मरने के बाद पट्टाभी के साथ दूसरा विवाह करती है। इस दूसरे विवाह में कोई असामाजिक तत्व नहीं है। लेकिन कांचना पट्टाभी से भी तृप्त नहीं होती है। वह एक और पुरुष रमेश की ओर आकर्षित होती है। उस के साथ शारीरिक संबंध भी जोडती है।

हिंदी-तेलुग लेखिकाओं के उपन्यासों में चित्रित दांपत्य जीवन

इस संक्षिप्त विश्लषण से एक बात प्रमाणित होती है कि हिंदी और तेलुगु की उपन्यास-लेखिकाओं के उपन्यासों का केंद्रीय भाव दांपत्य जीवन और उस में बदलावों को रेखांकित करने का रहा है। दुख की बात है कि दांपत्य जीवन के इस चित्रण में तनाव ग्रस्त या असफल दांपत्य जीवन के ही उदाहरण अधिक है। उपन्यास लेखिकाओं का यही आशय है कि असफल दांपत्य जीवन के कारण है और उन के परिणाम क्या हो सकते हैं। हिंदी और तेलुगु के उपन्यासों में कथ्यगत तीन विषय चुने गए हैं। वै हैं पारिवारिक संदर्भ, आर्थिक संदर्भ और नारी संदर्भ। इन में सर्वाधिक्ष महत्व पारिवारिक संदर्भ है। क्यों कि दांपत्य जीवन का संबंध परिवार से है। पारिवारिक जीवन दांपत्य जीवन को तथा दांपत्य जीवन पारिवारिक जीवन को प्रभावित करता है। सहज ही उपन्यास-लेखिकाएँ किसी भी मामले को परिवार के संदर्भ में ही देखती हैं। वैसे ही उन का सहज झुकाव नारी या पत्नी की ओर ही रहा है। उपन्यासों के परिचय से एक बात प्रमाणित होती है कि भारतीय पारिवारिक व्यवस्था में काफी बदलाव आया है। हिंदी के कठ गुलाब, वंशज तेलुगु के निशि रात्रिलो नक्षत्र प्रभलु, कोव्वोत्ति जैसे उपन्यास इस के साक्ष्य प्रमाण प्रस्तुत करते हैं। उपन्यासों से प्राप्त होनेवाला एक और तथ्य पारिवारिक संबंधों में बदलाव है। इस बदलाव के कारण ही दांपत्य जीवन तनाव ग्रस्त हो रहा है।

कई उपन्यासों में पारिवारिक सदस्यों के दुर्व्यवहार और स्वार्थपूर्ण व्यवहार के कारण कई दंपति अपनी शांति को खो बैठे हैं। उपन्यास लेखिकाओं के कई संदेश इस संदर्भ में प्रकट हुए है। चित्तकोबरा, पत्ताखोर, निष्काशन, बात एक औरत की, उस की पंचवटी आदि उपन्यास इस के श्रेष्ठ उदाहरण हैं। उसी रूप में संबंधों के बदलाव को तेलुगु के पुण्यभूमि कल्लु तेरु, बेटर ऑफ आदि उपन्यासों में देख सकते हैं।

लेखिकाओं ने इस ओर भी संकेत दिया है। मैं और मैं, वैतरणी, बेघर, आवाँ, अनित्य, विस्फोट जैसे उपन्यासों में उपन्यास लेखिकाओं ने पत्नी पात्रों के प्रति अधिक संवेदना जतायी है। तेलुगु के उपन्यास मट्टि मनिषी, कलियुगमुलो सीता, मिस्टर संपत एम.ए आदि इस दृष्टि से अधिक सफल उपन्यास है। पति-पत्नी के दांपत्य संबंध खतरे में पडने पर नारी या पत्नी ही अधिक समझौता करती है। वह परिवार को अपना मानती है। जब कि पति बहुत आसानी से परिवार को छोडने के लिए तैयार होता है।

निष्कर्ष :

इस अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि हिंदी और तेलुगु उपन्यासों में दांपत्य जीवन प्रमुख विषय के रूप में उभरकर सामने आया है। अधिकांश लेखिकाओं ने तनावपूर्ण और असफल दांपत्य संबंधों के माध्यम से सामाजिक यथार्थ

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :10.16(2026); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer-Peer Reviewed, Refereed & Open Access International Journal - As per UGC Norms
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:15, Issue:5(3), May 2026
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed: Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in

को उजागर किया है। वैचारिक असमानता, अहं, आर्थिक विषमता, शंका, अनमेल विवाह तथा लैंगिक शोषण जैसे कारण दांपत्य जीवन को प्रभावित करते हैं।

विशेष रूप से यह देखा गया कि इन परिस्थितियों में नारी अधिक संवेदनशील, सहनशील और संघर्षशील रूप में सामने आती है। वह परिवार को बचाने के लिए अधिक समझौते करती है, जबकि पुरुष अपेक्षाकृत कम जिम्मेदारी निभाता है।

अत: कहा जा सकता है कि हिंदी और तेलुगु उपन्यासों में नारी संवेदना न केवल व्यक्तिगत पीड़ा का चित्रण करती है, बल्कि सामाजिक बदलावों और पारिवारिक विघटन की ओर भी संकेत करती है।

संदर्भ सूची: -

1. ममता कालिया — *बेघर*
2. मृदुला गर्ग — *कठगुलाब*
3. परिमला सोमेश्वर — *अंतरंग तरंगालु*
4. जोन्नलगड्डा ललिता देवी — *बेटर ऑफ*
5. बीना देवी — *पुण्यभूमि कल्लु तेरु*
6. मुप्पाला रंगनायकम्मा — *बलिपीठम*
7. यद्दनपुड़ी सुलोचना रानी — *राग तरंगालु*
8. उषा प्रियंवदा — *पचपन खंभे लाल दीवारें*